सादे साबुन का उपयोग, कोरोना वायरस से बचाव

कोरोना वायरस ने सारे विश्व में हाहाकार मचा दिया है। लोग इससे बचने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रक्षालक (Sanitizer) खरीदने के लिए दवाईयों की दुकानों पर घूम रहे हैं जबकि इससे बचने के लिए आम साबुन से हाथों तथा मुंह को साफ करना ही सबसे अधिक प्रभावकारी तथा सस्ता साधन है। वायरस लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ज़हर और संस्कृत भाषा में इसे विष कहते हैं। यह एक गोलाकार गेंद की तरह होता है जिसके भीतर न्यूक्लिक अम्ल (Nucleic Acid) तथा बाहर प्रोटीन की परत होती है जिसे कैप्सिड कहते हैं। वायरस के जीनोमस इसी कैप्सिड में जुड़े होते हैं जो वायरस के स्वात्मक भेद तथा प्रभाव निर्धारित करता है।

जब तक वायरस का कण जिन्दा है वह मानव के शरीर में जाकर अपना घातक कार्य कर सकता है। परन्तु अगर इस कण को भागों में तोड़ दिया जाए तो वह निष्क्रिय हो जाता है। यह काम घर में प्रयोग करने वाला साबुन करता है।

विभिन्न प्रकार के साबुन जो हाथ धोने, नहाने तथा कपड़े धोने के लिए भी प्रयोग किए जाते हैं तथा जिसका उपयोग मानव सदियों से करता आ रहा है और इसके लाभ भी समझता है, सभी वायरसों को जिसमें कोरोना वायरस भी शामिल है को नष्ट करने के लिए एक अचूक बाण है। यह काम केवल साबुन ही करते हैं। डिटर्जेंट के पाउडर तथा टिकिया जो कपड़े धोने के लिए प्रयोग करते हैं वो ये काम नहीं करते हैं।

साबुन, फैटी एसिड के लवण होते हैं जो विभिन्न प्रकार के तेलों (नारियल, सरसों, महुआ व नीम इत्यादि) तथा पशुओं की चर्बी के सोडियम या पोटैशियम आयन्स जो सोडियम तथा पोटाशियम हाइड्रोआक्साइड या वाशिंग सोडा से सरल क्रिया द्वारा बनाए जाते हैं। घरों में भी लोग अपने उपयोग के लिये ऐसे साबुन की टिकिया बनाते हैं।

साबुन का कण एक लम्बा कण है जिसके एक सिरे पर कार्बोआक्सीलेट आयन सोडियम व पोटैशियम आयन से जुड़ा होता है। यह भाग हाइड्रोफिलिक (पानी की तरफ खीचने वाला) होता है, जिसके कारण साबुन के कण पानी में घुले रहते हैं। साबुन के कण का दूसरा भाग लम्बे हाइड्रोकार्बन चेन का बना होता है जो हाइड्रोफोफलिक होता है तथा फैटस और प्रोटीन से जुड़ने की अपार क्षमता रखता है। केवल साबुन के कण का यही भाग वायरस की प्रोटीन को खीच कर सारे वायरस के आकार को नष्ट कर देता है। टूट कर वायरस के जोनोमस साबुन के पानी द्वारा समा लिये जाते हैं। इस प्रकार घातक वायरस साबुन के पानी में टूट कर साफ पानी के साथ बह जाते हैं।

अगर आप कोरोना वायरस से बचना चाहते हैं तो साबुन की टिकिया अपने पास, घरों तथा कार्यस्थलों में रखें, इनका पूरा–पूरा उपयोग करें तथा दूसरों को भी जागरूक करें। इस तरह से आप अपने आप को बचायें एवं इस वायरस को दूसरों तक फैलने से भी रोकें।

– डा. अंजन कुमार कालिया
पूर्व प्रधान, वैज्ञानिक, चौ.स.कु.हि.प्र.कृ.वि.वि.,
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश

तकनीक और भूख

जिंदगी की सच्चाई यही है,
इंसान की कमाई यही है।
कहीं कोई तकनीक से खेले,
तो कहीं भूख सताई हुई है।।

रोज–रोज की पेट की आग,
सिक्कों से नहीं बुझती है।
दो रोटी की जुगत में जिंदगी,
पल–पल ही दुखदायी हुई है।।

क्यों हम आदी हो रहे निरंतर,
तकनीक और उपकरणों के।
जब कि हम सब ये मानते हैं कि,
क्या खोज कभी चिरस्थाई हुई है?

जीवन पुनः उन्हीं पुराने मूल्यों से,
जीने की ज़िद पर अड़ा हुआ है।
जहाँ दाल–रोटी, पेड़ की छांव हो,
साथ मिट्टी की महक समाई हुई है।।

अंतहीन तकनीक की ओर भागना,
व्यर्थ समय की बर्बादी ही तो है।
बेवज़ह की दिखावटी व्यस्तता से,
रिश्तों की मिठास निरुत्साही हुई है।।

बचपन भी अब बड़ा सा हो गया,
मीठी मासूमियत कहीं खो गई।
इन्टरनेट, आईपैड और मोबाइल से
सिर्फ़ प्रकृति की तबाही ही हुई है।।

गुल्ली–डंडे, गुलेल, गुट्टक वाला,
बचपना कहाँ गया जरा ढूंढो तो।
घोड़ा जमाल खाई पर मिलकर
दौड़ने भागने की रुखाई हुई है।।

अब फ़िर से पुराने दिनों की कद्र,
समझ आने तो लगी है सबको।
जीवन में बदलाव की प्रक्रिया से
व्यक्तित्व की पुनः सुधराई हुई है।।

– जया सिंह
भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान
इंदौर, मध्य प्रदेश